RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-03
March-2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[UGC Listed Journal]

समकालीन कविता में काल संसक्ति और दुष्यन्त कुमार

कण्व कुमार मिश्र

शोध छात्र हिन्दी विभाग अवधेश प्रताप सिंह, विश्वविद्यालय, रीवा (म.प्र.), भारत

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 13 March2019

Keywords
स्मकालीन आधुनिक काव्य दुष्यन्त कुमार

ABSTRACT

श्री दुष्यन्त कुमार एक ऐसे कवि हैं, जो अपने परिचय का मोहताज नहीं हैं। कविवर दुष्यन्त कुमार समकालीन और नई कविता के पूर्णतः समर्थ कवि हैं। उनकी कविताएँ आधुनिक काव्य धारा अति विशिष्ट पहचानों को प्रस्तुत करने वाली है। उनमें न केवल युग बोध की व्यापक दृष्टि है, अपितु नई कविता के विविध आयामों के साथ–साथ व्यापक आक्रोश भी है निदा, फ़ाज़ली दुष्यन्त कुमार के विषय में लिखते हैं कि ''दुष्यन्त की नज़र उनके युग की नई पीढ़ी के गुस्से और नाराज़ागी से सजी बनी है। यह गुस्सा और नाराज़गी उस अन्याय और राजनीति के कुकर्मों के खिलाफ़ नये तेवरों की आवाज थी जो समाज में मध्य वर्गीय झूठेपन की जगह पिछड़े वर्ग की मेहनत और दया की नुमानंदगी करती है। ''[1] प्रस्तुत शोध–पत्र में दुष्यन्त कुमार की दृष्टि से समकालीन कविता में का संमकित पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है।

भूमिका–

नई कविता के उपरान्त कविता बड़ी तीव्रता से तूफानी दौर से गुज़री। अनेक अन्दोलन कविता के क्षेत्र में हमारे सामने आये यथा–समसामयिक कविता, अकविता, सहज कविता, नूजन कविता इत्यादि। कविता, जीवन की व्याख्या है। अतः वह जिन्दगी के तमाम 'फलसफे' को अपने भीतर समेटे रहती है।

समकालीन कविता का स्वर व्यंग्य और आक्रोश सो भरा हुआ है। यह कविता उसा मोहभंग को दर्शाती है जो स्वतंत्रता के बाद लोगों के हृदय में उत्पन्न हुआ था। आज हमें लगता है कि हम पूरी तरह ठगे हए हैं। नेताओं के सारे वादे खोखले साबित हुए हैं। सबके घर में रोशनी पहुँचाने का वादा किया गया था, अब आप ही देख लीजिए कि कहाँ तक रोशनी पहुँची है, यथा–

''कहाँ तो तय था चिरागां हरेक घर के लिए।
कहाँ चिराग अवस्सर नहीं शहर के लिए।।''[2]

समकालीन कवि बिना किसी डर, भय के अपनी बेबाक, टिप्पणी के लिए जाना जाता है। समकालीन कविता अपने युग और परिवेश से सम्पृक्त है। इस कविता में हम अपने वर्तमान को देख सकते हैं। हमारी आशा–निराशा, आकांक्षा–अपेक्षा, राग–विराग, हर्ष–विषाद सब उसमें समाए हुए हैं। राजनीतिक, अव्यवस्था, कठिन होता जीवन–यापन, सामाजिक विकृतियाँ, खोखले सिद्धान्त सबको समकालीन कविता में समेटा गया है।

भोली भाली जनता को आज के नेताओं ने खिलौना समझ रखा है, तनिक देखिए तो सही–

''जिस तरह चाहो बजाओां इस सभा में
हम नहीं है आदमी हम झुनझुने हैं।''[3]

गोस्वामी जी ने रामचरित मानस में लिखा है कि–

''जासु राज प्रिया प्रजा दुःखारी
सो नृप अवसि नरक अधिकारी''[4]

पर यह बात तो आज के राजा। नेता पर लागू ही नहीं होती है। आम जनता परेशानियों से घिरी हुई है भूँखी है, बेरोजगारी का दंश झेल रही है। भ्रष्टाचार सुरक्षा की तरह मुँह बाये बैठी है, जो सम्पूर्ण मानव सभ्यता को खा डालनी चाहती है, पर आज के जब प्रतिनिधि कह रहे हैं कि–

''भूँख है तो सब्र कर,
रोटी नहीं तो क्या हुआ।
आजकल दिल्ली में,
जेरे बहस में यह मुद्दआ।।''[5]

किन्तु कोरी बहस से किसी का पेट भरने वाला नही है, उसके लिए धरातल में कार्य होना चाहिए। कुल मिलाकर समकालीन कविता का क्षेत्र हमारे आस–पास का परिवेश है और समकालीन कविता में जो काल संसक्ति है उसका अभिप्राय है–समय की गति के साथ यथासम्भव चलना। इस कविता ने यही किया है, स्वयं को समय के साध बदला है। दुष्यन्त कुमार ऐसी कविता के प्रमुख हस्ताक्षर हैं। दुष्यन्त कुमार कमी भी जन आन्दोलन के विरोधी नहीं थे, किन्तु जन आन्दोलनों में निज स्वार्थ नहीं होनी चाहिए बल्कि जनसेवा का भाव होना चाहिए–

''सिर्फ हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नहीं
मेरी कोशिश है कि ये सूरत बदलनी चाहिए।
मेरे सीने में नहीं तो तेरे सीने में ही सही,
तो कहीं भी आग, लेकिन आग जलनी चाहिए।''[6]

RRIJM 2015, All Rights Reserved

निष्कर्ष–निःसंदेह कविवर दुष्यन्त कुमार त्यागी समकालीन कविता का एक बड़ा चर्चित नाम है। त्यागी जी ने कभी औपचारिकता का कोरम पूरा नहीं किया बल्कि भोगे हए यथार्थ व जन समस्याओं को बड़ी ही ईमानदारी के साथ चित्रित किया है।

''मैं जिसे ओढ़ता बिछाता हूँ।
वही ग़ज़ल आप को सुनाता हूँ।।''[7]

निश्चित रूप में दुष्यन्त कुमार आधुनिक युग और समकालीन कविता के शीर्ष पुरुष है ''उनकी ग़ज़लों में जो आग है, वह आग उस व्यक्ति की आग है जो सामाजिक विसंगतियों को ध्यान में देखकर और समाज के बीच रहकर उसकी पीड़ा को पूर्णरूपेण समझाते हुए भी भीतर–भीतर सुलग रही है।''[8]

सन्दर्भ ग्रन्थ–सूची

1. हिन्दी ग़ज़ल : उद्‌भव एवं विकास, डॉ. रोहिताश्व अस्थाना
2. साये में धूप–दुष्यन्त कुमार
3. दुष्यन्त कुमार का आत्म कथ्य–सारिका पत्रिका
4. हिन्दी साहित्य–डॉ. अशोक तिवारी
5. आधुनिक हिन्दी कविता सिद्धान्त और समीक्षा–डॉ. विश्वंभर नाथ
6. पिकीपीड़िया–दुष्यन्त कुमार
7. हिन्दी ग़ज़ल और ग़ज़लकार–डॉ. मधु खराटे
8. सोठोत्तरी हिन्दी ग़ज़ल में समसामयिक–डॉ. संतोष विष्णु

RRIJM 2015, All Rights Reserved